पाठ – 4.1

अमर शहीद वीरनारायण सिंह

F5ZSDG

डॉ. सुनीत मिश्र

जीवन परिचय

डॉ. श्रीमती सुनीत मिश्र का जन्म 16 अक्टूबर, 1949 को मंडला, मध्यप्रदेश में हुआ। इन्होंने एम.ए., पी.एच. डी. (इतिहास) एवं पर्यटन में स्नातकोत्तर पत्रोपाधि प्राप्त की है। सोनाखान के वीर जमींदार शहीद वीरनारायण सिंह पर इनका प्रथम शोधकार्य है। इनके शोधपत्र, लेख विचारादि समाचार पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। इन्हें शिक्षा एवं महिला उत्थान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल एवं महिला आयोग, छत्तीसगढ़ शासन, के द्वारा राज्यपाल के हाथों सम्मानित किया गया है।

अतीत से ही छत्तीसगढ़ देश का एक गौरवशाली भू–भाग रहा है। यहाँ पर सर्वधर्म समभाव की भावना है, ऋषि–मुनियों एवं वीर योद्धाओं ने इस अचंल का नाम देश में रोशन किया है। यह क्षेत्र राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इस अंचल में अनेक महान् विभूतियों ने जन्म लिया तथा यहाँ की माटी को गौरवान्वित किया।

महानदी की घाटी एवं छत्तीसगढ़ के महान् सपूत सोनाखान के जमींदार वीर नारायण सिंह बिंझवार का जन्म 1795 में हुआ था। इनके पिता रामराय सोनाखान के जमींदार थे, रामराय ने ब्रिटिश संरक्षण काल के आरंभ होते ही 1818–19 में अंग्रेजों एवं भोंसला राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था जिसे नागपुर से आकर कैप्टन मैक्सन ने दबा दिया था। विद्रोह का दमन होने के बाद सोनाखान जमींदारी के गाँवों की संख्या 300 से घटकर 50 तक सीमित हो गई। इसके बाद भी रामराय का दबदबा समाप्त नहीं हुआ और बिंझवारों की तलवार का जादू सिर चढ़कर बोलता रहा। 1830 ई. में रामराय की मृत्यु के पश्चात् नारायण सिंह 35 वर्ष की अवस्था में जमींदार बने।

नारायण सिंह धर्म परायण थे,रामायण महाभारत में उनकी रुचि थी। गुरुओं से धर्म संबंधी, नीति संबंधी शिक्षा लेते थे। बाल्यकाल से ही तीर धनुष और बंदूक चलाना सीख चुके थे। मृदुभाषी, मिलनसार एवं परोपकारी प्रवृत्ति के कारण वे जनसंपर्क में विश्वास रखते थे और लोकोत्सव आदि में सम्मिलित होते थे। वे अपने कबरे घोड़े पर सवार होकर गाँव–गाँव भ्रमण कर जन समस्याएँ सुनते थे। उन्होंने तालाब खुदवाना, वृक्ष लगवाना एवं पंचायतों के माध्यम से जन समस्याओं का समाधान करना, जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए। सोनाखान में राजा सागर, रानी सागर

और नंद सागर तीन तालाब हैं जो इस जमींदार की सच्ची लोक कल्याणकारी नीतियों के साक्षी हैं। उन्होंने स्वयं नंद सागर के आस–पास वृक्षारोपण करके नंदनवन का रूप दिया था। उनके पिता ने जीते जी जो परंपराएँ शुरू की थीं उन्होंने तथा उनके पुत्र गोविंद सिंह ने उनका पालन किया।

अन्याय और शोषण के विरोधी वीर नारायण सिंह अल्पायु से ही अपने पिता के संघर्षों में भी साथ रहते थे। उनमें अपने पूर्वज बिसई ठाकुर जैसी दृढ़ता, फत्ते नारायण सिंह जैसा धैर्य एवं साहस तथा पिता रामराय जैसा जन–नेतृत्व करने की अपूर्व क्षमता थी जो अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में देखने को मिली। जमींदार बनते ही उनके सभी जनप्रिय गुणों का साक्षात्कार होने लगा। अपनी जमीदारी सँभालने के बाद उन्होंने प्रजा के दुख–दर्द को समझा और उसे दूर करने के लिए अनेक उपाय किए।

जमींदार होने के बाद भी नारायण सिंह बहुत सादा जीवन व्यतीत करते थे। उनका मकान बड़ी हवेली या किला नहीं था बल्कि बाँस और मिट्टी से बना साधारण मकान था। वे आम जनता के बीच समरस होकर ही अपने क्षेत्र का दौरा करते थे और रैयत की समस्याओं एवं कठिनाइयों का हल खोजते थे।

1854 के प्रारंभ में नागपुर राज्य के साथ छत्तीसगढ़ क्षेत्र भी अँग्रेजी राज्य में मिला लिया गया । कैप्टन इलियट ने इस अंचल की जमींदारियों का दौरा करके सरकार को रिपोर्ट भेजी। नए ढंग से टकोली (लगान) नियत किया जिसकी व्यापक प्रतिक्रिया हुई। नारायण सिंह ने भी अँग्रेजों की इस नई नीति का विरोध किया।

1835 से 1855 के मध्य सोनाखान जमींदारी में अनेक समस्याएँ आती रहीं किंतु नारायण सिंह ने उनका दृढ़ता पूर्वक सामना किया। वे अपने ग्रामों को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहे। इस अवधि में अँग्रेज अपनी देशव्यापी समस्याओं में व्यस्त थे। अफगान, सिंध, मिस्र, बर्मा आदि ज्वलंत प्रश्न थे। नागपुर में रघुजी तृतीय का शासन चल रहा था। राजा अस्वस्थता के कारण छत्तीसगढ़ आकर प्रशासन देखने की स्थिति में नहीं था, यद्यपि सोनाखान जमींदारी की जागरुकता से वह सतर्क था। नारायण सिंह ने इन परिस्थितियों से लाभ उठाते हुए अपने अधीनस्थ जमींदारी क्षेत्र में सुशासन स्थापित करने का प्रयास किया।

सोनाखान जमींदारी से टकोली की अदायगी न होने के कारण रायपुर में डिप्टी कमिश्नर सी. इलियट, नारायण सिंह के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रस्त था। वह उन्हें दंडित करने की प्रतीक्षा में था। इनके लिए वह सूक्ष्म कारणों को भी खोजने में सक्रिय था। उसने नागपुर के कमिश्नर को शिकायत की कि मेरी दृष्टि में जमींदार का व्यवहार असहनीय एवं अत्याचार पूर्ण है। ऐसी स्थिति में उसे खालसा के व्यापारी माखन के गोदाम को जमींदार द्वारा लूटे जाने की सूचना प्राप्त हुई। अतः डिप्टी कमिश्नर ने नारायण सिंह को बुलवाया परन्तु आदेश की अवहेलना होने पर उनके खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिया। हुआ यह था कि सन् 1856 में छत्तीसगढ़ में सूखा पड़ा जिसमें नारायण सिंह की जमींदारी के लोग दाने–दाने के लिए तरसने लगे। खालसा गाँव के माखन नामक व्यापारी के पास अन्न के विशाल भंडार थे। नारायण सिंह को यह असह्य था कि जनता भूखों मरती रहे और व्यापारी अनाज भंडारों में जमा करते रहें। अतः नारायण सिंह ने भंडारों के ताले तोड़ दिए और उसमें से उतना अनाज निकाल लिया जो भूख के शिकार किसानों के लिए आवश्यक था। नारायण सिंह के चरित्र एवं ईमानदारी का पता इससे चलता है कि उन्होंने जो कुछ लिया था उसके विषय में तुरंत ही डिप्टी कमिश्नर को लिख दिया परन्तु अंग्रेजों ने षडयंत्र कर सोनाखान के जमींदार को गिरफ्तार करने के लिए मुल्की घुड़सवारी की एक टुकड़ी भेज दी थी और थोड़ी बहुत परेशानी के बाद संबलपुर में उन्हें 24 अक्टूबर, 1856 को गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर मुकदमा चलाया गया। वस्तुतः नारायण सिंह की राजनैतिक चेतना एवं जागरुकता ब्रितानी अधिकारियों को चुनौती थी।

नारायण सिंह को चोरी और डकैती के जुर्म में बंदी बनाया गया था। सोनाखान के किसान अपने नेता को जेल में देख बेचैन थे, दुखी थे किंतु उनके पास कोई चारा नहीं था। उसी समय देश में अँग्रेजी सत्ता के विरोध में विप्लव की अग्नि फूट पड़ी। इसका लाभ उठाकर सोनाखान के किसानों ने संभवतः संबलपुर के विद्रोही नेता एवं क्रांतिकारी सुरेन्द्र साय से संपर्क किया और उनकी मदद से नारायण सिंह ने रायपुर जेल से भाग निकलने की योजना बनाई। दस माह चार दिन बंदी रहने के बाद नारायण सिंह तीन अन्य साथियों के साथ भाग निकले। वे जेल से भाग कर सीधे सोनाखान चले गए और तीन माह तक स्वतंत्र घूमते रहे। रायपुर के डिप्टी कमिश्नर ने उन्हें पुनः पकड़वाने हेतु 1000 रुपए का इनाम घोषित करवाया साथ ही उसने तुरंत एक दस्ते को सोनाखान की ओर भेज दिया परन्तु ब्रिटिश सरकार उन्हें खोजने या बंदी बनाने में असमर्थ रही। जब नारायण सिंह आ गए तो गाँव–गाँव के आदिवासी अपने नेता को देखकर खुशी–खुशी दृढ़ निश्चय कर संगठित हुए, विद्रोह का नगाड़ा गाँव–गाँव बजने लगा।

नारायण सिंह भली–भाँति जानते थे कि अँग्रेज सरकार उन्हें बख्शेगी नहीं और जल्दी–से–जल्दी गिरफ्तार करने के लिए पूरी ताकत लगा देगी और ऐसा हुआ भी। नारायण सिंह ने परिणामों की तनिक भी परवाह किए बिना अँग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष का शंखनाद जारी रखा। बिंझवार जाति के जमींदार नारायण सिंह के साहसिक कार्यों ने जनहित कार्यों में संलग्न होकर अंग्रेजों का विरोध अकेले ही हिम्मत के साथ किया। सोनाखान पहुँचकर नारायण सिंह ने 500 बंदूकधारियों की एक सेना एकत्र करने में सफलता पाई। उन्होनें हथियार एवं गोला बारूद बड़ी मात्रा में एकत्र किए और सोनाखान पहुँचाने वाले प्रत्येक रास्ते पर जबर्दस्त मोर्चाबंदी कर दी।

रायपुर के डिप्टी कमिश्नर इलियट को नारायण सिंह के जेल से भाग निकलने और सोनाखान पहुँचने का समाचार जब से मिला था उसकी नींद हराम हो गई थी। रायपुर में अँग्रेजों की फौज थी परन्तु इलियट को उस पर पूर्ण विश्वास नहीं था। यह रायपुर स्थित फौज के प्रति अविश्वास का ही परिणाम था कि नारायण सिंह के विरुद्ध कार्यवाही करने में इसलिए इलियट को पूरे 20 दिन लग गए। जनहित में वीर नारायण सिंह का संघर्ष अँग्रेजों से प्रारंभ हुआ। छत्तीसगढ़ में 1857 की क्रांति का नेतृत्व उन्होंने किया। अँग्रेजों ने इसे विद्रोह माना था। जिले के अव्यवस्थित प्रशासन के कारण विद्रोह के लिए उपयुक्त अवसर था। सोनाखान गाँव को खाली करा दिया गया। पास की पहाड़ी में मोर्चा बंदी की गई। सोनाखान की ओर आने वाले हर रास्ते पर नाकेबंदी करवाकर मजबूत दीवारें खड़ी करवा दी गई। निकट के गाँवों से रसद, शस्त्र, गोला–बारूद आदि इकट्ठे किए और साहस के साथ मोर्चा संभाला।

उन्होंने अँग्रेजों के विरुद्ध खुली बगावत का ऐलान कर दिया था। उनकी गिरफ्तारी अँग्रेज डिप्टी कमिश्नर के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन चुकी थी तो वीर शहीद नारायण के लिए आत्म–सम्मान और देश की सुरक्षा व आजादी की बात बन गई थी। लैफ्टीनेंट ग्रांट के नेतृत्व में पैदल एवं घुड़सवार सेना की एक टुकड़ी बिलासपुर से

रवाना हुई जो रायपुर जिले के उत्तरी क्षेत्र तथा नर्मदा क्षेत्र के रामगढ़ एवं सोहागपुर क्षेत्र में क्रांतिकारियों की गतिविधियों को रोकने हेतु भेजी गई।

वीर नारायण सिंह के नेतृत्व में सोनाखान गाँव के आसपास के सभी किसान संगठित हो गए तथा उन्होंने शपथ ली कि वे उनके नेतृत्व में अपने प्राणों की बलि देने के लिए तैयार हैं। वस्तुतः यह छत्तीसगढ़ का पहला किसान संगठन था और वीर नारायण सिंह छत्तीसगढ़ के प्रथम किसान नेता थे। किसानों में चेतना फैलाकर, उनकी शक्ति को संगठित कर अत्याचारी शासन से लोहा लेने का कार्य प्रथमतः वीर नारायण सिंह ने ही किया। उनकी सेना में किसान भी भर्ती हुए किंतु उनके पास न तो पर्याप्त हथियार थे और न ही कोई सैनिक प्रशिक्षण, किंतु उनके पास अटूट मनोबल था और था स्वाधीनता के लिए संघर्ष का संकल्प था। अत्याचार, अन्याय से लड़ने की प्रेरणा थी। अटूट मनोबल से बड़ा कोई हथियार नहीं होता। देखते–ही–देखते सोनाखान गाँव एक फौजी छावनी में बदल गया। जंगल के बीच बसे इस आदिवासी गाँव में तीरकमानों एवं बंदूकों की झनकार सुनाई पड़ने लगी। स्वाधीनता के संघर्ष की पहली झनकार सोनाखान के जंगलों से ही उठी थी।

इसी बीच अंग्रेजों के नेतृत्वकर्ता स्मिथ को मंगल नामक व्यक्ति से सूचना मिली कि समयाभाव के कारण नारायण सिंह नाकेबंदी का कार्य पूर्ण नहीं कर सका है तथा अवरोध हेतु खड़ी दीवार अपूर्ण है। स्मिथ ने अपने अधीनस्थ जमींदारों के कतिपय सहायकों को घाटी की पूर्ण नाकेबंदी हेतु आदेशित किया तथा 80 सैनिक और नियुक्त किए।

स्मिथ को अपनी फौजी तैयारी में रायपुर में 20 दिन एवं खरौद में 8 दिन लगे थे। स्मिथ खरौद से रवाना होकर पहले नीमतल्ला, फिर देवरी पहुँचा। यह 30 नवम्बर 1857 की बात है। देवरी जमींदार स्मिथ के स्वागत के लिए तैयार ही बैठा था। देवरी का जमींदार रिश्ते में नारायण सिंह का काका लगता था। उसकी नारायण सिंह से खानदानी शत्रुता थी। स्मिथ ने देवरी जमींदार को हथियार की तरह उपयोग किया। जयचंदों एवं मीर जाफरों ने ही इस देश को सदा विदेशी शक्तियों के हाथ बेचा है।

देवरी से स्मिथ ने ऐसी व्यवस्था की कि नारायण सिंह को सोनाखान में बाहर कहीं से भी कोई सहायता न मिल सकें। सोनाखान जंगलों एवं पहाड़ों से घिरा एक किले के समान है। सोनाखान की ओर प्रवेश के सारे रास्तों को अवरुद्ध कर स्मिथ एक दिसम्बर 1957 को प्रातःकाल देवरी से सोनाखान पर आक्रमण करने हेतु रवाना हुआ। आक्रमण के समय देवरी जमींदार महाराज साय और शिवरीनारायण का बालापुजारी भी साथ थे। देवरी जमींदार स्मिथ की फौज का पथ प्रदर्शन कर रहा था। स्मिथ की फौज जब सोनाखान से तीन फर्लांग दूर रह गई थी तब एक नाला पड़ा। उस समय 10 बजा होगा। नारायण सिंह के सिपाहियों ने स्मिथ की सेना पर अकस्मात् हमला कर दिया। दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध प्रारंभ हो गया। तोप एवं बंदूकों से हमले प्रारंभ हो गए। स्मिथ लिखता है ''किंतु हम आगे बढ़ते रहे तथा सुरक्षित रूप से दोपहर तक सोनाखान पहुँच गए।'' हरिठाकुर का मत है कि प्रारंभ में 10 बजे स्मिथ को प्रथम आक्रमण के समय भारी नुकसान हुआ था परंतु ठीक समय पर सैन्य मदद मिले जाने से वे आगे बढ़ते ही चले गए। नारायण सिंह के सिपाही इस बाढ़ को रोकने में असमर्थ रहे। अतः नारायण सिंह जंगलों की ओर चले गए ताकि अवसर मिलते ही पुनः आक्रमण कर सके। स्मिथ ने लिखा है कि ''हम शीघ्रता से पैदल ही नारायण सिंह के घर तक गए, यह भी अन्य गाँवों की तरह रिक्त था। हमने वहाँ गोली चालन किया और उसके घर से पहाड़ियों तक पहरा लगवा दिया किंतु पहाड़ियों पर तब तक हमला न करने का दृढ़ संकल्प किया था जब तक कि कटंगी से लोग सहायता के लिए न आ जाएँ ताकि दोनों ओर से उन पर हमला

किया जा सके।'' पहाड़ी के ऊपर से भीषण गोलाबारी कर नारायण सिंह ने स्मिथ को एक बारगी लौटने पर विवश कर दिया। तत्पश्चात् खाली ग्राम में स्मिथ ने आग लगा दी। गाँव के लोग पहाड़ी पर से यह दृश्य देख रहे थे। जंगल के दूसरी ओर से नारायण सिंह की सेना ने गोलियों की बौछार शुरू की। इसके फलस्वरुप स्मिथ को अपनी जान बचाने हेतु गोलियों की पहुँच से दूर गाँव से हटने को बाध्य होना पड़ा। रात्रि में स्मिथ ने व्यक्तियों का लगातार आगमन देखा। जलते हुए सोनाखान ग्राम के उस पार पहाड़ियों में हलचल देखते हुए स्मिथ की वह रात्रि बेचैनी में व्यतीत हुई। स्मिथ लिखता है कि वह रात अँधेरी थी किंतु हमें चन्द्रमा के प्रकाश तथा हमारे सामने धधकते हुए ग्राम से लाभ हुआ।

सोनाखान धू–धू कर जल रहा था। नारायण सिंह ने स्मिथ से रणक्षेत्र में मुकाबले की तैयारी तो की थी किंतु इस प्रकार के अग्निकांड की कल्पना उन्होंने नहीं की थी। सुबह तक नारायण सिंह ने देखा कि सोनाखान राख के ढेर में बदल चुका है।

नारायण सिंह के आंदोलन को अँग्रेजों ने कुछ स्थानीय लोगों की ही मदद से कुचल दिया था। स्मिथ ने नारायण सिंह के साथ कोई शर्त नहीं रखी। वह सोनाखान के जमींदार के साथ 3 दिसंबर को रायपुर की ओर वापस चल दिया तथा 5 दिसम्बर को रायपुर पहुँचा। नारायण सिंह को उसने रायपुर के डिप्टी कमिश्नर इलियट को सौंप दिया एवं स्मिथ ने संबलपुर एक पत्र लिखकर निवेदन किया कि गोविंद सिंह को रायपुर भेजें क्योंकि उस समय वह उस जिले में था। उसने व्यक्ति भेजकर यह निर्देश दिया कि व्यवस्था हेतु जमींदारी में नई नियुक्तियाँ की जाएँ। तथा नारायण सिंह द्वारा बनाई गई सेना को रद्द कर दिया जाए।

डिप्टी कमिश्नर इलियट लिखता है– ''मेरे कोर्ट के समक्ष जमींदार को पेश किया गया और उस पर 1857 के अधिनियम के सेक्शन 6 एक्ट 14 के अंतर्गत अभियोग लगाया गया। 1857 की धारा 01 और अधिनियम 11 के तहत मैंने उसे फाँसी की सजा सुना दी।'' 9 दिसंबर 1957 को इलियट ने रायपुर स्थित तीसरा भारतीय पैदल सेना के कमांडर को सूचित किया – ''उसे कल उषाकाल में फाँसी पर लटकाया जाएगा अतः निवेदन है आप इस कार्यवाही को देखने और जरूरत पड़ी तो व्यवस्था बनाए रखने के लिए आपकी कमान में जो रेजीमेंट है उसकी जेल के निकट परेड कराएँ।'' (अनु. शम्भू दयाल गुरू) 10 दिसम्बर 1857 की सुबह सजा तामील कर दी गई। छत्तीसगढ़ के प्रेरणा प्रतीक शहीदवीर नारायण सिंह अमर हो गए।

वीर नारायण सिंह को फाँसी देने के कुकृत्य से जनता में आतंक के स्थान पर आक्रोश व्याप्त हुआ। रायपुर की जनता एवं सैनिकों के समक्ष दी गई फाँसी की घटना ने अल्पकाल हेतु ब्रिटिश आतंक का भय प्रदर्शित किया किंतु कालांतर में यह प्रेरणा के रूप में 18 जनवरी 1858 के विद्रोह के अवसर पर दृष्टिगत हुई जिसका नेतृत्व वीर हनुमान सिंह राजपूत ने किया था। विद्रोह के बाद 17 लोगों को गिरफ्तार कर अँग्रेजों ने 22 जनवरी 1858 को सार्वजनिक फाँसी दी जिसमें सभी जाति एवं धर्म के लोग थे। शहीद नारायण सिंह का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। आजादी की लड़ाई में वे छत्तीसगढ़ के प्रेरणास्त्रोत रहे। वीर नारायण सिंह छत्तीसगढ़ में 19वीं शताब्दी के पुनर्जागरण काल में राजनीतिक सामाजिक संचेतना के संवाहक थे।

इस प्रकार देश की स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेते हुए छत्तीसगढ़ के वीर सेनानी शहीद हो गए। हमारे लिए गौरव की बात है कि छत्तीसगढ़ में स्वाधीनता के लिए पहला बलिदान देने वाला एक आदिवासी वीर था जिसने यह सिद्ध कर दिया कि स्वाधीनता की अग्नि इस क्षेत्र के आदिवासियों के हृदय में भी बराबर धधक रही थी। जेल के कैदियों एवं जनता ने भी 10 दिसम्बर 1857 को मातम मनाया तथा वीर साथी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

छत्तीसगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम की यह चिरस्मरणीय घटना है । वीर नारायण सिंह के वंशज व क्षेत्र की जनता आज भी सोनाखान जाकर श्रद्धासुमन अर्पित करती है। नारायण सिंह की वीरगाथा घर–घर में व्याप्त है। गर्व के साथ जनता वीर नारायण सिहं यह कहकर याद करती है –

वीर नारायण तुम्हारी वीरता बलिदान से ।
आग के शोले निकलते अब भी सोनाखान से ।।
शहीदों व सेनानियों के बलिदानी गौरव का प्रतीक।
देश में तिरंगा ध्वज फहर रहा है, बड़ी शान से ।।

शब्दार्थ

साक्षी – गवाह; **विप्लव** – क्रांति, विद्रोह; **परवाह** – चिंता; **रसद** – सैनिकों की खाद्य सामग्री; **किला** – दुर्ग; **रणक्षेत्र** – युद्धभूमि; **फौज** – सेना; **कुकृत्य** – बुरा कार्य; **रणक्षेत्र** – युद्ध क्षेत्र; **कालांतर** – समय पश्चात्; **क्षोभ** – क्रोध जनित दुःख; **अकस्मात्** – अचानक; **नाकेबंदी** – घेराबंदी।

अभ्यास

पाठ से

1. वीर नारायण सिंह में कौन से मानवीय मूल्य दिखते हैं, जो उन्हें अद्वितीय सिद्ध करते हैं।
2. वीर नारायण सिंह को अपने पूर्वजों से कौन से गुण प्राप्त हुए थे?
3. जमींदार होने के बाद भी, शहीद वीर नारायण सिंह की लोकप्रियता के क्या कारण थे?
4. माखन व्यापारी के गोदाम से अनाज को लूटने के पीछे जमींदार का क्या उद्देश्य था?
5. शहीद वीर नारायण सिंह निर्भीक, दृढ चरित्र और ईमानदार थे। यह किस घटना से पता चलता है?
6. वीर नारायण सिंह की विद्रोह की रणनीति क्यों असफल हुई?
7. छत्तीसगढ़ की जनता के बीच वीर नारायण सिंह की लोकप्रियता के कारण क्या हैं?

पाठ से आगे

F69NF4

1. अपने आस–पास के ऐसे लोगों की जानकारी एकत्र करें जो जनसेवा के कार्य में निस्वार्थ भाव से लगे रहते हैं?
2. 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में वीर नारायण सिंह के अलावा छत्तीसगढ़ की माटी के और कौन–कौन से शहीद थे जिन्होंने अपने प्राण न्योछावर किए? उनके बारे में जानकारी एकत्र कर उनकी जीवन–यात्रा पर साथियों के साथ समूह चर्चा करें?

3. आदिवासी जीवन सरल, निर्भीक और प्रकृति के सबसे करीब है? इस संदर्भ में उनके गुणों के पाँच उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए?

4. ''अटूट मनोबल से बड़ा कोई हथियार नहीं होता'' इसे आपने अपने जीवन में कई बार महसूस किया होगा। अपने जीवन के उन प्रसंगों को लिखकर कक्षा में सुनाइए?

भाषा के बारे में

1. (क) उन पर मुकदमा चलाया गया।

(ख) स्मिथ ने देवरी के जमींदार को हथियार की तरह उपयोग किया।

पाठ से लिए गए इन दोनों वाक्यों में फर्क यह है कि 'क' एक कर्मक वाक्य है अर्थात् इस प्रकार के वाक्य में क्रिया पर 'क्या' प्रश्न का जवाब 'निर्जीव संज्ञा' (मुकदमा) के रूप में प्राप्त होता है। जैसे– क्या चलाया गया? उत्तर– मुकदमा चलाया गया।

जब कि 'ख' वाक्य द्विकर्मक वाक्य है। देवरी के 'जमींदार' और 'हथियार' इस वाक्य में दो कर्मों का प्रयोग हुआ है। एक कर्म अर्थात निर्जीव संज्ञा (हथियार) और दूसरा कर्म अर्थात किसको/किसे के उत्तर में सजीव संज्ञा (जमींदार) का प्रयोग हुआ है।

आप इसी प्रकार के पाँच–पाँच वाक्यों की रचना कीजिए।

2.
- मनः + बल = मनोबल — तमः गुण = तमोगुण
- मनः + भाव = मनोभाव — तपः वन = तपोवन
- अधः + भाग = अधोभाग — रजः गुण = रजोगुण
- वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध — मनः अनुकूल = मनोनुकूल

उदाहरण से स्पष्ट है कि विसर्ग (:) से पूर्व 'अ' हो और विसर्ग (:) के पश्चात 'अ', या किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, या पाँचवाँ वर्ण या य, र, ल, व, ह में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है। इसी प्रकार के अन्य उदाहरण खोजकर उनका संधि विच्छेद कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. छतीसगढ़ में स्वतंत्रता संग्राम के कौन–कौन से स्थान विद्रोह के मुख्य केंद्र थे? उन स्थानों का नाम लिखकर नेतृत्वकर्ता का नाम लिखिए।

2. छत्तीसगढ़ के नक्शे में उन स्थानों को चिन्हित करें जो स्वतंत्रता आन्दोलन के केंद्र रहे। इस दौरान उन स्थानों पर हुई गतिविधिओं की संक्षिप्त जानकारी भी दें।